

369वाँ

सफलतम अंक

वर्ष 31

नवम् अंक

अप्रैल

2009

प्रतियोगिता दर्पण

हिन्दी मासिक

इस अंक में

- 1527 सम्पादकीय
1529 पाठकों के पत्र
1530 राष्ट्रीय घटनाक्रम
1534 2009-10 के अंतरिम रेल बजट में यात्री किरायों में कटौती
1537 अंतरिम केन्द्रीय बजट 2009-10 : उत्पाद शुल्क व सेवा कर में कटौती
1541 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
1544 आर्थिक-वाणिज्यिक परिदृश्य
1551 नवीनतम सामान्य ज्ञान
1560 राज्य समाचार
1566 खेलकूद
1568 रोजगार समाचार
1570 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
1572 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं
1579 स्मरणीय तथ्य
1581 विश्व परिदृश्य
1583 आर्थिक लेख—शेयर बाजार तथा म्यूचुअल फण्ड से जुड़ी अहम् जानकारियाँ
1586 कैरियर लेख—एस.एस.बी. : सेवा चयन बोर्ड के साक्षात्कार में गुणों का मूल्यांकन
1592 शिक्षा लेख—शिक्षा में गुणवत्ता का चिन्तन
1594 समसामयिक लेख—प्रवासी भारतीय सम्मेलन : एक सिंहावलोकन
1595 शैक्षिक लेख—सर्वशिक्षा अभियान—एक महत्वाकांक्षी योजना
1600 भौगोलिक लेख—विश्व तापन के बढ़ते हॉट स्पॉट्स एवं इसके वैश्विक आपदाकारी प्रभाव
1601 समसामयिक लेख—रक्षा क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी
1603 ग्राम्य विकास लेख—भारत में ग्राम विकास की नई चेतना
1605 समसामयिक राजनीतिक लेख—(i) अमरीकी राष्ट्रपति पद पर ओबामा की ताजपोशी के क्या मायने हैं ?
1610 (ii) लिट्टे के खाले के बाद क्या श्रीलंका में जातीय हिंसा का दौर समाप्त हो जाएगा ?
1613 समाजशास्त्रीय लेख—थारु जनजाति एवं उनमें महिलाओं की सुदृढ़ स्थिति
1615 समसामयिक विज्ञान एवं वैज्ञानिक लेख—वर्ष 2008 में नोबेल पुरस्कार से नवाजे गए विश्व के ये महान् वैज्ञानिक
1617 सार संग्रह
1620 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान—(i) उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (मुख्य) परीक्षा, 2008
1631 (ii) छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (प्रा.) परीक्षा, 2008
1639 (iii) एस.एस.सी. कर सहायक परीक्षा, 2008
1644 (iv) पंजाब नेशनल बैंक (कृषि अधिकारी) परीक्षा, 2009
1647 उद्योग व्यापार जगत्
1649 ऐच्छिक विषय—(i) राजनीति विज्ञान—आर.ए.एस. / आर.टी.एस. (प्रा.) परीक्षा, 2008
1654 (ii) उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग प्रा. परीक्षा (विशेष), 2008
1660 (iii) मध्य प्रदेश पी.एस.सी. राज्य सेवा (प्रा.) परीक्षा, 2008
1666 विविध जानकारी—आवास एवं शहरी गरीबी उपशमन क्षेत्र में प्रगति—पर्यवलोकन
1669 तर्कशक्ति परीक्षा—बैंक ऑफ बड़ौदा (पी.ओ.) परीक्षा, 2008
1676 अंकगणित—एस.एस.सी. कर सहायक परीक्षा, 2008
1679 संख्यात्मक अभियोग्यता परीक्षा—पंजाब नेशनल बैंक (प्रबन्ध प्रशिक्षु) परीक्षा, 2009
1683 क्या आप जानते हैं ?
1684 अपना ज्ञान बढ़ाइए
1685 प्रश्न आपके उत्तर हमारे
1686 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—विश्वव्यापी आर्थिक संकट : कारण एवं निदान
1688 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-359 का परिणाम
1689 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—भारत द्वारा आतंकवाद को समाप्त करने हेतु इसके स्रोत पर कड़ी सैनिक कार्यवाही की जानी चाहिए
1694 English—N.D.A. Exam., 2008

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

आप परिस्थितियों के दास मत बनिंए

असफलता के लिए लोग प्रायः परिस्थितियों को दोष देते हैं और अन्त में भाग्य अथवा भगवान को कोसने लगते हैं. वे भूल जाते हैं कि सभ्यता का विकास परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करके तथा उनको अनुकूल बनाकर ही हुआ है. मानव का स्वभाव स्वतन्त्रता है. भाग्य अथवा परिस्थिति के प्रति समर्पण मानवता के विरुद्ध है. यदि भाग्य कोई वस्तु है, तो उसका भी निर्माण व्यक्ति स्वयं करता है. अतएव हमें अपना स्वरूप पहचानकर निरन्तर पुरुषार्थ करते रहना चाहिए, सफलता अवश्य मिलेगी.

दुर्बल हृदय और आत्मविश्वास से रहित व्यक्ति थोड़े से प्रयासों के बाद हार मान लेते हैं और अपनी असफलता की जिम्मेदारी भाग्य या भगवान पर डाल देते हैं. ऐसा करके वे आगामी प्रयत्नों के प्रति उदासीन हो जाते हैं और किसी अनहोनी घटना और चमत्कार की प्रतीक्षा करने लगते हैं. साम्यवादियों ने ऐसे ही लोगों को लक्ष्य करके भगवान को अफीम की गोली कहा है कि भगवान के नाम पर अकर्मण्य और आलसी व्यक्ति कर्तव्य और कर्म से विरत हो जाते हैं. इस श्रेणी के व्यक्तियों में प्रायः तीन कमियाँ देखने में आती हैं—(i) वे अपनी कमियों को स्वीकार करना तो दूर, देखने तक के लिए तैयार नहीं होते हैं. (ii) असफलता की जिम्मेदारी अपने ऊपर नहीं लेते हैं. (iii) वे काल्पनिक छवि बना लेते हैं और उसको बिगड़ता वे नहीं देख सकते. अतः वे जीवन के यथार्थों को भी अनदेखा कर देते हैं. ऐसी मनोवृत्ति के व्यक्ति अपनी असफलता और त्रुटियों से सबक लेने के स्थान पर उनके लिए परिस्थितियों, भाग्य तथा ईश्वर को जिम्मेवार मानते हैं. अपनी असफलताओं के लिए भगवान को दोष देना भगवान के प्रति घोर अन्याय अथवा उसके नाम का दुरुपयोग ही कहा जाएगा.

शताब्दी का ही मनुष्य आज जीवित हो जाए, तो वह पहचान भी नहीं पाएगा कि वह कहाँ आ गया है.

ऐसे मानव को परिस्थितियों का दास अथवा उनके हाथों की कठपुतली मानते हैं. वे भूल जाते हैं कि मनुष्य पाषाण युग की सभ्यता से आगे बढ़कर अपने पुरुषार्थ के बल पर आज परमाणु युग में पहुँच गया है. यदि पाषाण युग का मनुष्य अपनी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त न करता, तो हम आज भी उसी बर्बर युग में रह रहे होते. मनुष्य को छोड़कर समस्त चराचर जगत् आज भी उसी स्थिति में है, जिसमें वह हजारों वर्ष पहले था. मनुष्य ने अपनी बुद्धि और पुरुषार्थ के बल पर परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करके सभ्यता के विकास के वर्तमान स्तर को प्राप्त किया है. सभ्यता की प्रगति इतनी तीव्र वेग से हुई है कि पाषाण युग का मनुष्य तो क्या यदि पिछली

